विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
शिवराज विजय
गद्यांश व्याख्या

डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा
दिनांक- 01/10/2020

असौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः, कम्बुकण्ठः, आयतललाटः, सुबाहुः विशाललोचनः चाऽऽसीत् ।

शब्दार्थ-

असौ = वह, बटुः = ब्रह्मचारीबालक, आकृत्या = आकृति से, वर्णेन = रङ्ग से, जटाभिः = जटाओं के द्वारा, वयसा = उम्र के द्वारा, षोडशवर्षदेशीयः = सोलह वर्ष की अवस्था वाला, कम्बुकण्ठः = शङ्ख के समान सुन्दर कण्ठ वाला, आयत-ललाटः = चौड़े मस्तक वाला, सुबाहुः मनोरम भुजाओं वाला, विशाललोचनः = बड़े बड़े नेत्रों वाला ।

संस्कृतव्याख्या-

असौ - अयम्, बटुः - ब्राह्मणः, आकृत्या - आकारेण, सुन्दरः - रम्यः, वर्णेन गौरः - गौरवर्णः, जटाभिः ब्रह्मचारी - ब्रह्मविचरणशीलः, वयसा - अवस्थया, षोडशवर्षदेशीयः = ईषदसम्प्राप्तषोडशवर्षः, कम्बुकण्ठः - शङ्खग्रीवः, आयतललाटः - विस्तृतमस्तकः, सुबाहुः -

सुभुजः, विशाललोचनः - विशालनयनः, च आसीत् ।

भावार्थ -

वह ब्राह्मण बालक मुखाकृति से अत्यन्त सुन्दर और गौरवर्ण का था। वह बालक जटाओं से ब्रह्मचारी प्रतीत होता था, उसकी अवस्था सोलह वर्ष की थी। उसका कण्ठ शंखाकृति, मस्तक चौड़ा, भुजाएँ लम्बी और स्थूल तथा नेत्र बड़े-बड़े थे।

पदव्याख्या -

आकृत्या और वर्णेन में 'प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम्' सूत्र से तृतीया विभक्ति जटाभिः = 'इत्थंभूतलक्षणे' सूत्र से तृतीया। षोडशवर्षदेशीयः = षोडशवर्ष + देशीय, 'ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः' सूत्र से देशीय प्रत्यय, कम्बुकण्ठः = कम्बुरिव कण्ठो यस्य सः, (बहु०), सुबाहुः = शोभनौ बाहू यस्य सः (बहुव्रीहि)

विशेष -

इस गद्य में 'कम्बुकण्ठः' में लुप्तोपमालंकार है। महाकवि ने ब्रह्मचारी के सुन्दर अवयवों का स्वाभाविक एवं उदात्त चित्रण किया है। अतः उदात्तालंकार का संयोग है तथा वर्णसाम्य अनुप्रास का भी विनियोग है। इति।

Scanned with CamScanner